7 अध्याय

एशिया महाद्वीप

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- एशिया महाद्वीप का परिचय, इसका वर्गीकरण और भौतिक संरचना कैसी है।
- एशिया महाद्वीप की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था और उसकी विशेषताओं के बारे में सीखेंगे कि वह अन्य महाद्वीप से अलग कैसे है।

परिचय (Introduction)

एशिया तथा यूरोप यद्यपि एक ही भू-खंड के हिस्से हैं फिर भी सामान्यत: इन्हें अलग-अलग महाद्वीपों के रूप में जाना जाता है। विश्व के कुल भूभाग का एक-तिहाई एशिया में है। इस प्रकार से एशिया सभी महाद्वीपों में सबसे बड़ा महाद्वीप है। एशिया महाद्वीप का अक्षांशीय विस्तार 10° दक्षिण अक्षांश से 80° उत्तरी अक्षांश के बीच है और इसका देशान्तर विस्तार (पूर्व से पश्चिम) 25° पूर्व देशान्तर से 170° पश्चिमी देशान्तर के बीच है। एशिया महाद्वीप की मुख्य भूमि का पूरा विस्तार विषुवत रेखा के उत्तर में स्थित है। एशिया महाद्वीप का अधिकतर भाग पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है परंतु इसका कुछ भाग पश्चिमी गोलार्द्ध में भी स्थित है।

भौतिकी भूगोल (Physical Geography)

एशिया को पाँच प्रमुख भौतिक विभागों में बाँटा जा सकता है। ये पाँच विभाग निम्नवत हैं—

1. उत्तर की निम्न भूमियाँ
2. मध्यवर्ती पर्वतीय पट्टी
3. दक्षिणी पठार
4. बड़ी नदियों की घाटियाँ
5. द्वीप समूह।

उत्तर की निम्न भूमियाँ (मैदान)

एशिया महाद्वीप के उत्तरी भाग के पश्चिम में यूराल पर्वत से पूर्व में लीना नदी के मध्य विस्तृत निम्न भूमि क्षेत्र है। इस निम्न भूमि को 'साइबेरिया का मैदान' कहते हैं। इस मैदान में ओब, येनीसा और लीना नदियाँ बहती हैं जो मध्य एशिया की उच्च भूमियों और पर्वतों से निकलकर उत्तर दिशा की ओर बहती हैं। संसार की सबसे गहरी झील 'बैकाल' साइबेरिया में स्थित है। वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार समस्त विश्व की झीलों के मीठे पानी का 20% अकेला बैकाल झील में है।

मध्यवर्ती पर्वतमालाएँ

उत्तरी निम्न भूमियों के दक्षिण में वलित पर्वतों एवं पठारों का जाल है। पामीर के पठार पर अनेक पर्वत श्रृंखलाएँ आकर मिलती हैं जो पामीर गाँठ का निर्माण करती हैं। पामीर के पठार को 'संसार की छत' के नाम से जाना जाता है क्योंकि यह संसार का सबसे ऊँचा पठार है। पामीर के पठार से कई पर्वत श्रृंखलाएँ विभिन्न दिशाओं में फैली हैं, जो निम्नवत हैं:

तालिका 7.1: मध्यवर्ती पर्वतमालाएं

दिशाएँ	पर्वत श्रृंखलाओं के नाम
पश्चिम की ओर	हिंदुकुश
उत्तर पूर्व की ओर	तिएनशान
पूर्व की ओर	क्युनलुन
दक्षिण पूर्व की ओर	काराकोरम व हिमालय

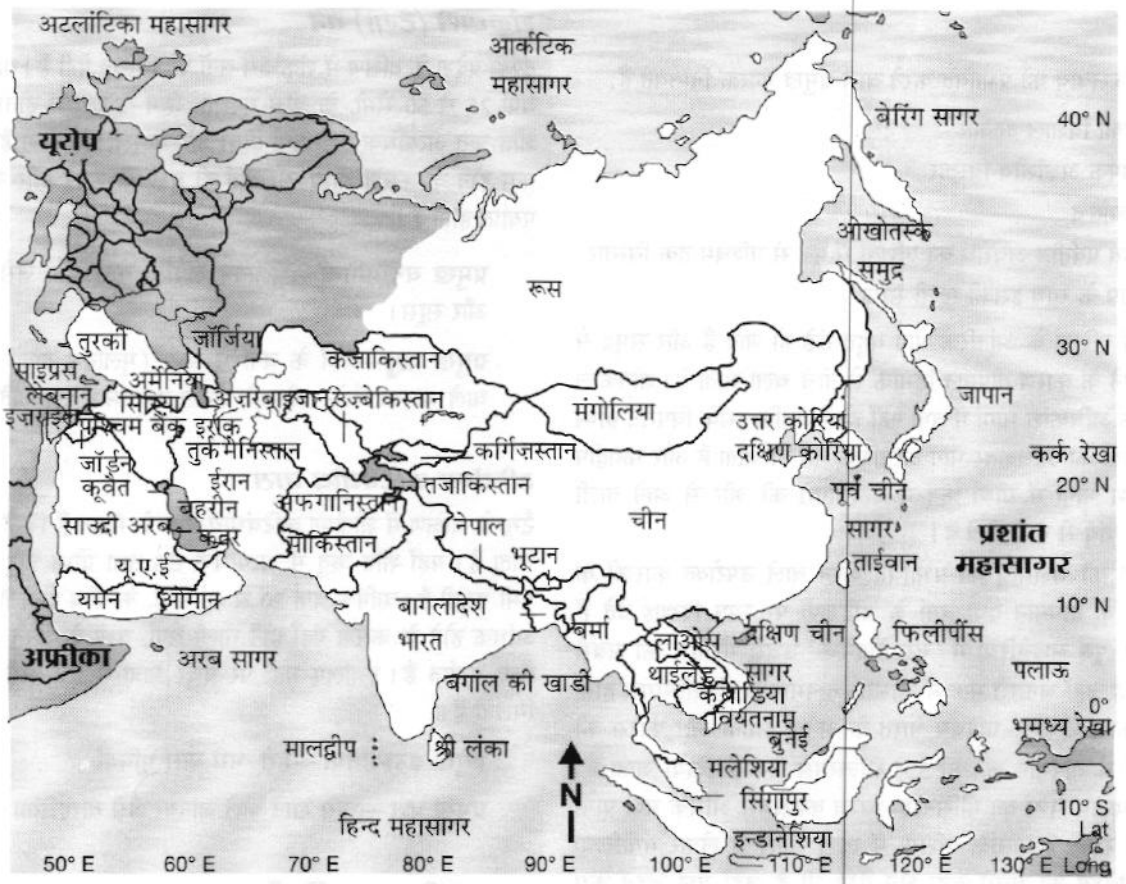

चित्र 7.1: एशिया महाद्वीप

नोट: पर्वत श्रृंखला में कई श्रेणियाँ, पर्वत, पठार तथा उच्च भूमियाँ हैं।

पामीर ग्रंथि के दक्षिण-पूर्व की ओर काराकोरम तथा हिमालय की श्रेणियाँ फैली हुई हैं। इनमें विश्व के कुछ उच्चतम शिखर जैसे माउन्ट एवरेस्ट (विश्व का उच्चतम शिखर) तथा K^2 (दूसरा उच्चतम शिखर) क्रमशः हिमालय तथा काराकोरम श्रेणियों से संबंधित है। दक्षिण में, काराकोरम तथा हिमालय एवं उत्तर में, क्युनलुन श्रेणी के बीच 'तिब्बत का पठार' स्थित है। पश्चिम में तिएनशन पर्वतमाला तथा उत्तर-पूर्वी साइबेरिया की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच यहाँ प्राचीन वलित पर्वतों—अल्ताई, याब्लोनोय तथा स्टेनोवाय श्रेणियों की खण्डित 'अर्द्धचंद्राकार पहाड़ियाँ' हैं। यहाँ तारिम बेसिन तथा गोबी का विशाल ठण्डा मरूस्थल भी है।

दक्षिणी पठार

मध्यवर्ती पर्वतीय पट्टी के दक्षिण में कुछ पठार हैं जो अति प्राचीन शैलों से निर्मित हैं। ये पठार एशिया की मुख्य भूमि के दक्षिण की ओर निकले हुए प्रायद्वीपों के भू-भाग हैं। इनमें अरब का पठार, भारत का दक्षिणी पठार तथा यूनान का पठार सम्मिलित है।

बड़ी नदियों की घाटियाँ

इन पर्वतों तथा पठारों के बीच संसार की कुछ सबसे अधिक उपजाऊ नदी घाटियाँ हैं जिनमें प्रमुख निम्नवत हैं—दजला, फरात, सिंधु, गंगा-ब्रह्मपुत्र, अयारवादी (इरावदी), मेकांग, सिक्यांग, चांग जियांग और ह्वांग आदि। उपरोक्त नदी घाटियाँ विश्व के सर्वाधिक सघन बसे क्षेत्रों में से हैं।

द्वीप समूह

एशिया की भूमि का सबसे रोचक लक्षण इसके अधिकतर द्वीपों का दक्षिण पूर्व तथा पूर्व में स्थित होना है। एशिया महाद्वीप के तीन प्रमुख द्वीप समूह हैं—हिंदेशिया, फिलीपीन्स और जापान।

जलवायु

एशिया की जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नवत हैं:

- इसका विशाल आकार
- व्यापक अक्षांशीय विस्तार
- उच्चावच
- वृहत पर्वतीय अवरोध का एशिया में पूर्व से पश्चिम तक विस्तार
- यूरोप के साथ इसकी खुली सीमा

शीत ऋतु में एशिया के आंतरिक भाग बहुत ठंडे हो जाते हैं और समुद्र से बहुत दूर होने के कारण तापमान हिमांक से नीचे चला जाता है। शीतकाल में एशिया के अधिकांश भागों में वर्षा नहीं होती जबकि इसके विपरीत ग्रीष्म ऋतु में एशिया का अधिकतर भाग अत्यधिक गर्म हो जाता है और महाद्वीप के अधिकांश भागों में ग्रीष्म ऋतु में महासागरों की ओर से आने वाली आर्द्रतायुक्त वायु से वर्षा होती है।

एशिया की जलवायु को प्रभावित करने वाले उपरोक्त कारकों के प्रभाव यहाँ के तापमान तथा वर्षा के प्रतिरूपों पर स्पष्ट दिखाई देते हैं जैसे—उत्तर-पूर्व साइबेरिया में 'बरखोयान्स्क' उत्तरी गोलार्द्ध का सबसे ठंडा स्थान है जहाँ जनवरी माह में औसतन तापमान .45° सेल्सियस होता है। ग्रीष्म काल में उत्तर-पश्चिम भारत के अनेक स्थानों और फारस की खाड़ी क्षेत्रों में तापमान लगभग 33° सेल्सियस रिकार्ड किया जाता है। भारत में मेघालय राज्य का मौसिनराम विश्व का सबसे अधिक वर्षा प्राप्त करने वाला स्थान है जबकि एशिया में लाल सागर से लेकर मंगोलिया तक फैला विश्व का सबसे बड़ा क्षेत्र ऐसा भी है जहाँ वर्षा बहुत कम होती है। अत: यह स्पष्ट है कि एशिया महाद्वीप में तापमान और वर्षा में बहुत अधिक भिन्नता मिलती है।

प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्यजीव

एशिया की प्राकृतिक वनस्पति में व्यापक विभिन्नता पाई जाती है क्योंकि इन प्राकृतिक वनस्पतियों का यहाँ की जलवायु से घनिष्ठ संबंध है। एशिया की प्राकृतिक वनस्पतियों को मुख्यतया छ: भागों में बाँटा जा सकता है, जो निम्नवत हैं—1. टुण्ड्रा वनस्पति, 2. शंकुधारी (टैगा) वन, 3. शीतोष्ण कटिबंधीय घास, 4. मरुस्थलीय वनस्पति, 5. मानसूनी वन, 6. विषुवतीय वर्षा वन

टुण्ड्रा वनस्पति

एशिया के उत्तरी तट पर टुण्ड्रा वनस्पति की पेटी है। इस क्षेत्र की अधितर भूमि वर्ष के अधिकांश समय में हिम से ढकी रहती है। यहाँ वार्षिक वर्षा लगभग 30 सेमी. तक मुख्यत: हिम के रूप में होती है। ग्रीष्म ऋतु छोटी और ठंडी होती है जबकि शीत ऋतु लंबी और बहुत अधिक ठंडी होती है। इसके फलस्वरूप पौधे लंबे नहीं हो पाते।

प्रमुख वनस्पतियाँ—काई और लिचेन

प्रमुख पशु—रेनडियर

शंकुधारी (टैगा) वन

टुण्ड्रा प्रदेश के दक्षिण में शंकुधारी वनों की विस्तृत पेटी है। यहाँ पर वार्षिक वर्षा 25 से 50 सेमी. के बीच मुख्यत: हिम के रूप में होती है। यहाँ पर शीत ऋतु अत्यधिक ठंडी तथा ग्रीष्म ऋतु मामूली गर्म होती है। वाष्पीकरण कम होने के कारण थोड़ी-सी वर्षा ही वृक्षों के उगने और बढ़ने के लिए पर्याप्त होती है।

प्रमुख वनस्पतियाँ—मुलायम लकड़ी वाले वृक्ष जैसे—चीड़, फर और स्प्रूस।

प्रमुख पशु—यहाँ के वनों में समूर (मुलायम बालों वाली खाल) वाले जानवर जैसे—लोमड़ी, सेबल तथा मिंक पाए जाते हैं।

शीतोष्ण कटिबंधीय घास

टैगा के दक्षिण में शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदान हैं जिन्हें स्टेपीज कहा जाता है। यहाँ शीत ऋतु में अत्यधिक ठंड तथा ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक गर्मी पड़ती है। वार्षिक वर्षा 20 से 40 सेमी. के बीच होती है। वाष्पीकरण अधिक होने के कारण यहाँ होने वाली वर्षा, वृक्षों के उगने और बढ़ने के लिए पर्याप्त है। इसलिए यहाँ पर प्रचुर मात्रा में हरी-भरी घास भूमियाँ मिलती हैं॥

प्रमुख वनस्पतियाँ—हरी-भरी घास भूमियाँ

प्रमुख पशु—घास खाने वाले जानवर जैसे बारहसिंगा

मरुस्थलीय वनस्पतियाँ

दक्षिण-पश्चिम और मध्य एशिया के विशाल भू-भाग पर मरुस्थल है। अरब और थार के ऊष्ण मरुस्थल दक्षिण-पश्चिम एशिया में हैं जबकि गोबी और तिब्बत के ठंडे मरुस्थल मध्य एशिया में हैं। इन सभी प्रदेशों में मरुस्थलीय वनस्पति पाई जाती है चूंकि पेड़-पौधों की वद्धि के लिए अनुकूल दशाएँ न मिलने के कारण यहाँ छोटी-छोटी कंटीली झाड़ियाँ और कुछ निम्न कोटियों की घास उगती है।

प्रमुख वनस्पतियाँ—छोटी-छोटी कटीली झाड़ियाँ

प्रमुख पशु—ऊँट, गधा और विशिष्ट प्रकार का छोटा हिरण।

नोट—ऊँचे पठारी भागों में याक पाया जाता है।

मानसूनी वन

दक्षिणी, दक्षिणी-पूर्वी तथा पूर्वी एशिया में मानसूनी वन पाए जाते हैं। इस प्रदेश में ग्रीष्म ऋतु गर्म और आर्द्र होती है। यहाँ अधिकतर वर्षा ग्रीष्म ऋतु में 62 से 1250 सेमी. के मध्य होती है। शीत ऋतु मृदुल तथा शुष्क होती है। उत्तर-पूर्वी एशिया में अपेक्षाकृत अधिक ठंडी जलवायु मिलने के कारण शीतोष्ण वन पाए जात हैं।

प्रमुख वनस्पतियाँ—सागौन, साल, चंदन

प्रमुख पशु—हाथी

विषुवतीय वर्षा वन

एशिया के सुदूर दक्षिणी भागों में, जो विषुवत रेखा के अधिक निकट हैं, विषुवतीय वर्षा वन मिलते हैं। ये वन संघन होते हैं।

प्रमुख वनस्पतियाँ—विविध प्रकार के वृक्ष, पौधे तथा झाड़ियाँ।

प्रमुख पशु—लंगूर, बंदर

जन समुदाय

क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से एशिया सबसे बड़ा महाद्वीप है यहाँ पर विश्व की 59% से अधिक जनसंख्या निवास करती है।

यहाँ पर विभिन्न नृजातीय समूह के लोग निवास करते हैं जिनके द्वारा विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं। साथ ही यह महाद्वीप संसार के सभी प्रमुख धर्मों का प्रादुर्भाव स्थल रहा है अर्थात यह कहा जा सकता है कि इतनी अधिक विविधता के बावजूद भी एशिया के लोग एक सूत्र में पिरोए हुए हैं।

परिवार तथा गाँव एशिया की परंपरागत इकाइयां थीं जो औद्योगीकरण एवं नगरीकरण होने के कारण अलग-अलग दर से परिवर्तित हो रहे हैं। आज एशिया के लगभग प्रत्येक देश में पुराने और नई जीवन पद्धतियाँ साथ-साथ विद्यमान हैं।

प्राकृतिक संसाधन

एशिया अनेक प्राकृतिक संसाधनों जैसे मृदा, वन एवं खनिज संसाधनों में धनी है। परंतु इन संसाधनों का वितरण असमान है। संसाधनों के उपयोग की प्रकृति एवं सीमा मुख्य रूप से लोगों की आकांक्षाओं और उनके वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास की दर पर निर्भर करती है। उदाहरणस्वरूप जापान के पास बहुत सीमित मात्रा में प्राकृतिक संसाधन है परंतु फिर भी यह संसार के सबसे अधिक औद्योगिक रूप से विकसित देशों में से एक है। अगर हम अल्प मात्रा में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर आधुनिक अर्थव्यवस्था को स्थापित करने की क्षमता को देखें तो शायद यह संसार के देशों में प्रथम स्थान पर होगा। ऐसा जापानी लोगों की दक्षता के कारण ही संभव है। ये आयातित कच्चे पदार्थों की बड़ी निपुणता और कुशलता से उच्च गुणवत्ता वाली अधिक मूल्यवान वस्तुओं जैसे—इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं, कैमरों और मोटर वाहनों में बदल देते हैं।

एशिया के प्रमुख प्राकृतिक संसाधन के वितरण के प्रारूप निम्नवत हैं—

1. **मृदा संसाधन**—एशिया का बहुत बड़ा भाग पर्वतों और मरुस्थलों से घिरा हुआ है। अत: एशिया की कुल भूमि का छठवां भाग ही कृषि योग्य है जो मुख्य रूप से मैदानों और नदी घाटियों में फैला हुआ है। कुछ नदी घाटियों में जहाँ उपजाऊ मृदा, उपयुक्त जलवायु और सुनिश्चित जल आपूर्ति है वहाँ कृषि कार्य बहुत पहले ही प्रारंभ हो गया था।

2. **वन संसाधन**—एशिया में मुख्यत: तीन प्रकार के वन पाए जाते हैं जो निम्नवत हैं—

तालिका 7.2: वनों के प्रकार

वनों के प्रकार	स्थान	वनों की विशेषता
1. शीतोष्ण कटिबंधीय कोणधारी वन	रूस, जापान और हिमालय के पर्वतीय प्रदेशों में समुद्रतल से 1600 से 3300 मीअर की ऊंचाई के मध्य पाए जाते हैं।	इन वनों से मुलायम लकड़ी प्राप्त होती है जो इमारती कामों में तथा कागज की लुग्दी और रेयान बनाने में काम आती है।
2. मानसूनी वन	दक्षिण, दक्षिण-पूर्ण के कुछ भागों और पूर्व एशिया में मिलते हैं।	इन वनों में सागौन, साल और बांस जैस उपयोगी वृक्ष पाए जाते हैं।
3. विषुवतीय वन	हिंदेशिया और मलेशिया तथा विषुवत रेखा के निकट के कुछ द्वीप समूह में मिलते हैं।	इन वनों में विविध प्रकार के वृक्ष, पौधे तथा झाड़ियां मिलती है।

3. **खनिज संसाधन**—एशिया में अनेक प्रकार के खनिज जैसे लोहा, मैंगनीज, बाक्साइट, अभ्रक, टिन, कोयला, खनिज, तेल और प्राकृतिक गैस पाई जाती हैं। इन संसाधनों का वितरण असमान है।

वर्तमान समय में कोयला, खनिज तेल और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाशम ईंधन ऊर्जा के स्रोत बने हुए हैं।

ध्यातव्य हो कि

खनिज संसाधन	प्रमुख देश
लोहा	रूस, चीन, अजरबैजान और भारत
अभ्रक और बॉक्साइट	भारत
टिन	मलेशिया
कोयला	रूस, यू.एस. और भारत
खनिज तेल और प्राकृतिक गैस	मध्य, दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण एशिया के दशों में

आर्थिक क्रियाएँ (Economic activities)

एशिया महाद्वीप की प्रमुख आर्थिक क्रिया 'कृषि' है। यहाँ सभी प्रकार की प्रमुख कृषि पद्धतियाँ (पुरातन से आधुनिक तक) देखी जा सकती हैं जो

निम्न प्रकार से हैं—(i) स्थानान्तरित (Shifting) कृषि (ii) सघन कृषि (iii) विस्तृत कृषि

1. **स्थानांतरी कृषि**—स्थानांतरी कृषि के प्रमुख तत्व निम्नवत हैं:
   - **विशेषता**—फसल उगाने का सबसे प्राचीन तरीका।
   - **कार्य पद्धति**—कृषि के विविध कार्य जैसे—मिट्टी खोदना और फसलों को काटने का कार्य साधारण और अपरिष्कृत औजारों द्वारा किया जाता है। इस प्रकार की कृषि में वन के एक भाग को आग लगाकर साफ कर दिया जाता है तत्पश्चात् पुराने ढंग से भूमि की जुताई और बीज की बुआई की जाती है और जब फसल पककर तैयार हो जाती है तो एसे काट लिया जाता है। जब दो-तीन वर्ष उपरांत मृदा की उर्वरता समाप्त हो जाती है तब उस भूमि को छोड़ कर वन के दूसरे स्थान को कृषि के लिए साफ किया जाता है।
   - **प्रमुख पक्ष**—पहला तो इस प्रकार कह कृषि से उत्पादन बहुत कम होता है और दूसरा बहुत-सी बहुमूल्य वन सम्पदा व्यर्थ नष्ट हो जाती है।
2. **सघन कृषि**—सघन कृषि के प्रमुख तत्व निम्नवत हैं:
   - **विशेषता**—कृषि की यह पद्धति एशिया में सर्वाधिक प्रचलित है।
   - **कार्य पद्धति**—जनसंख्या घनतव अधिक होने के कारण यहाँ औसतन खेतों के आकार बहुत छोटे हैं। इन छोटे भूखण्डों पर काफी शारीरिक श्रम का प्रयोग किया जाता है। और कृषि कार्य बड़े व्यवस्थित ढंग से किया जाता है जैसे—खेत को जोतना, पंक्तियाँ बनाना, बीज बोना, खाद डालना, खेतों की सिंचाई, खरपतवार निकालना, फसल काटना तथा अंत में बाजार के लिए अथवा रखने के लिए अनाज को तैयार करना शामिल हैं।
   - **प्रमुख पक्ष**—इस पद्धति से फसलों का उत्पादन अधिक होता है। किसान एक ही खेत से एक वर्ष में दो या तीन फसलें तक ले सकते हैं। परंतु यह मृदा की उर्वरता तथा जल आपूर्ति की अनिश्चितता पर निर्भर करता है।
3. **विस्तृत कृषि**—विस्तृत कृषि के प्रमुख तत्व निम्नवत हैं:
   - **विशेषता**—यह कृषि पश्चिमी साइबेरिया और मध्य एशिया के कुछ क्षेत्रों में की जाती है।
   - **कार्य पद्धति**—जनसंख्या घनत्व कम होने के कारण यहाँ खेतों का आकार बड़ा है। इस प्रकार बड़े-बड़े खेतों पर मानव श्रम से कार्य चलाना संभव नहीं होता इसलिए इन खेतों पर कृषि का सारा कार्य मशीनों से किया जाता है। मशीनों के अंतर्गत ट्रेक्टर छिड़काव द्वारा सिंचाई करने की मशीनें तथा फसल काटने की मशीनें सम्मिलित हैं।
   - **प्रमुख पक्ष**—कृषि की यह पद्धति पूर्णता वैज्ञानिक है जिससे कुल उत्पादन अधिक होता है।

- एशिया में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलें निम्नवत हैं—

तालिका 7.3: प्रमुख फसलों के उत्पादक देश

प्रमुख फसल	उत्पादक देश
चावल	भारत, चीन, जापान, बांग्लादेश और दक्षिण-पूर्व एशिया के देश।
गेहूं	पश्चिम साइबेरिया, कजाकिस्तान, चीन, उत्तरी भारत, पाकिस्तान और दक्षिण पश्चिम एशिया के देश।
गन्ना	पाकिस्तान, भारत, चीन, थाईलैंड और हिंदेशिया
चाय	भारत, श्रीलंका, चीन, जापान और हिंदेशिया
कपास	चीन, मध्य एशिया के देश (तजाकिस्तान, कजाखिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उजबेकिस्तान) भारत और पाकिस्तान
रबड़	मलेशिया, हिंदेशिया, थाईलैंड, भारत, चीन और श्रीलंका

परिवहन (Transportation)

सड़कें और रेलमार्ग परिवहन व्यवस्था के अति सामान्य साधन हैं। भू-भाग की प्रकृति इनके निर्माण को प्रभावित करती है। एशिया में मैदानी और घनी जनसंख्या वाले क्षेत्रों मे सड़कें और रेलमार्गों के सघन जाल हैं। एशिया के सुदूर क्षेत्रों को विश्व के अन्य भागों से जोड़ने में वायुमार्ग का महत्वपूर्ण योगदान है। समुद्र परिवहन प्राचीनकाल से ही महत्वपूर्ण रहा है। पूर्व और पश्चिम के मध्य व्यापार मुख्य रूप से महासागरों द्वारा ही किया जाता रहा है। समुद्री मार्ग भारी सामानों के लिए सदैव ही, सबसे सस्ता परिवहन का साधन रहा है।

अध्याय सार संग्रह

- एशिया विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है, जो पृथ्वी के स्थलीय क्षेत्रफल के लगभग 30 प्रतिशत (4.46, 14000 वर्ग किमी.) भाग पर फैला है।
- लाल सागर और स्वेज नहर एशिया को अफ्रिका से अलग करता है। बेरिंग जलसंधि द्वारा यह उत्तर अमेरिका से अलग होती है।
- एशिया महाद्वीप में तीन प्रमुख प्रायद्वीप हैं—अरब का प्रायद्वीप व इंडोचीन का प्रायद्वीप। अरब प्रायद्वीप विश्व का सबसे बड़ा प्रायद्वीप है।
- रूस के एशियाई भाग को 'साइबेरिया' कहते हैं। ओब, एनेसी और लीना इसकी प्रमुख नदियाँ हैं। ये तीनों नदियाँ आर्कटिक महासागर में गिरती हैं।
- विश्व की सबसे गहरी झील बैकाल (गहराई—1741 मीटर) एवं सबसे बड़ी झील कैस्पियन सागर (क्षेत्रफल—3,71,800 वर्ग किमी.) भी साइबेरिया में ही स्थित है।
- सबसे अधिक वर्षा भारत के मेघालय राज्य की खासी पहाड़ियों में स्थित मासिनराम में होती है। इससे पहले चेरापूँजी (नया नाम—सोहरा) विश्व का सबसे अधिक वर्षा का क्षेत्र माना जाता था।
- एशिया का सबसे गर्म स्थान जैकोबाबाद (पाकिस्तान) तथा सबसे ठंडा स्थान बरखोयान्स्क (साइबेरिया) है, जहाँ तापमान क्रमश: 57°C तथा -69°C मिलता है। बर्खोयान्स्क को 'पृथ्वी का शीत ध्रुव' भी कहते हैं।
- एशिया में खाद्यान्न की प्रमुख फसलें धान, गेहूँ, मक्का, ज्वार-बाजरा और रागी है, जबकि प्रमुख नकदी फसलों के अंतर्गत चाय, गन्ना, जूट, कपास, रबर और तंबाकू आते हैं।
- विश्व की सबसे ऊँची रेलवे लाइन का निर्माण चीन में किया गया है। उ.प्र. चीन के हिंगहाए प्रांत से शुरू होकर तिब्बत के ल्हासा तक फैली इस रेलवे लाइन की ऊँचाई 4500 मी. है।
- एशिया में ही विश्व का सबसे लंबा (1300 मी.) प्लेटफार्म गोरखपुर (उ.प्र.) तथा सबसे लंबा रेलमार्ग ट्रांस-साइबेरियन रेलमार्ग स्थित है।
- पाकिस्तान के उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत (NWFP) में 'स्वात घाटी' अवस्थित है जिसे पाकिस्तान का स्वर्ग कहा जाता है।
- पाकिस्तान का परमाणु शक्ति केंद्र काहुटा है और खुशाब में परमाणु रिएक्टर निर्माणाधीन है।
- एवरेस्ट, धौलागिरि, कंचनजंघा, मकालू, अन्नपूर्णा, गौरीशंकर आदि नेपाल की प्रमुख चोटियाँ है। विश्व की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट (सागरमाथा, ऊँचाई-8848 मी.) नेपाल और चीन की सीमा पर पड़ती है। कंचनजंघा नेपाल और सिक्किम (भारत) के सीमावर्ती क्षेत्र में है।
- बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र को 'जमुना' कहा जाता है। गंगा में मिलने के बाद संयुक्त धारा को 'पद्मा' कहा जाता है।
- उपजाऊ डेल्टा मिट्टी एवं अनुकूल जलवायु के कारण विश्व में सर्वाधिक जूट का उत्पादन करता है एवं जूट उद्योग बांग्लादेश का सर्वप्रमुख उद्योग है।
- चाय श्रीलंका की राष्ट्रीय आय का प्रमुख साधन है, क्योंकि यह विश्व में चाय का सबसे बड़ा निर्यातक देश है।
- मालदीव दक्षिण एशिया का सबसे छोटा राष्ट्र है। भारत के मिनीकॉय द्वीप से 8° चैनल के द्वारा अलग होता है।
- दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रति व्यक्ति पेट्रोलियम उत्पादन में 'ब्रुनई' का स्थान प्रथम है।
- कम्बोडिया में 'अंकोरवाट मंदिर' (विष्णु मंदिर) अत्यधिक प्रसिद्ध है।
- इंडोनेशिया विश्व का सबसे बड़ा सिनकोना उत्पादक देश है। बांडुंग इसका सबसे बड़ा उत्पादक केन्द्र है।
- सिनकोना से कुनैन बनाई जाती है जो मलेरिया की दवा है।
- संसार का सबसे ऊँचा पठार तिब्बत, अब चीन के अधिकार क्षेत्र में है जहाँ से सिंधु, सतलज, ब्रह्मपुत्र, साल्वीन और मेकांग जैसी बड़ी नदियाँ निकलती हैं। इसके उत्तर में तकलामाकन पठार है जो ठंडा और सुनसान रेगिस्तान है।
- चीन की बड़ी नदियाँ यांगटीसीक्यांग, सीक्यांग और ह्वांगहो है। ये तीनों पूर्व की ओर बहते हुए प्रशांत महासागर से मिलती हैं। ह्वांगहो के जल में पीली मुलायम मिट्टी बहने के कारण इसे 'पीली नदी' भी कहते हैं।
- चीन विश्व का सबसे बड़ा (36%) चावल उत्पादक देश है। गेहूँ उत्पादन में चीन ने अब विश्व में प्रथम (17%) स्थान प्राप्त कर लिया है।
- चीन विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मक्का उत्पादक देश है।
- तंबाकू उत्पादन में भी चीन का स्थान विश्व में प्रथम है।
- चाय का सबसे बड़ा उत्पादक देश चीन है और भारत दूसरे स्थान पर है।
- चीन विश्व का सर्वाधिक (27%) कपास उत्पन्न करने वाला देश है।
- शंघाई देश का सबसे बड़ा सूती वस्त्रोद्योग केंद्र और सबसे बड़ा पत्तन है। शंघाई 'चीन का मानचेस्टर' कहलाता है।
- 'हांगकांग व मकाओ' चीन में विलय किए गए नवीनतम भू-भाग हैं जो पहले क्रमश: ब्रिटेन एवं पुर्तगाल के उपनिवेश थे।
- जापान का 'फ्यूजीयामा' (सुषुप्त ज्वालामुखी) सबसे बड़ा ज्वालामुखी है। यह होन्शू द्वीप में टोकियो के पास है।
- प्राकृतिक उपहार के रूप में जापान को एक लंबी तटरेखा (27,000 किमी.) मिली है जो दंतुरित है। अत: प्राकृतिक पत्तनों का यहाँ स्वाभाविक विकास हुआ है।
- मत्स्य उद्योग में जापान का चीन के बाद विश्व में दूसरा स्थान है।
- शहतूत की पत्तियों पर पाले गए रेशम के कीड़ों से प्राप्त कच्चा रेशम पैदा करने में जापान का विश्व में प्रथम स्थान है।
- जापान विश्व का सबसे बड़ा जलपोत उत्पादक देश भी है।
- दक्षिणी भाग में संसार का सबसे बड़ा रेतीला मरुस्थल है, जिसे 'रब-अल-खाली' कहते हैं।
- खनिज तेल के भंडारण व निर्यात में सऊदी अरब का संसार में पहला स्थान है, जबकि उत्पादन में रूस के बाद दूसरा स्थान है।
- ईरान से ओमान हॉरमुज जलसंधि के द्वारा अलग होता है।
- सऊदी अरब के बाद तेल भंडार में इराक का विश्व में दूसरा स्थान है।